

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग  
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र  
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय  
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-92

दिनांक- शुक्रवार, 90 फरवरी, 2023



**विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन**

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 25.4 एवं 10.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 98 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 57 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.3 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 2.0 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 5.3 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 16.1 एवं दोपहर में 28.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान  
(11-15 फरवरी, 2023)**

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 11-15 फरवरी, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 25 से 29 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 11 से 14 डिग्री सेल्सियस के बीच बने रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 8 से 12 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

**• समसामयिक सुझाव**

- मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान भाई हल्दी, ओल की तैयार फसलों की खुदाई करें तथा राई-सरसों की तैयार फसलों की कटाई प्राथमिकता देकर करें। समय से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो गाभा की अवस्था में आ गयी हो उसमें सिंचाई कर 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- शुष्क मौसम को देखते हुए किसान भाई आलू की तैयार फसल की खुदाई करें। खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दे। बीज वाली आलू की फसल की उपरी लती काट दें।
- इस समय लहसुन एवं अगात बोयी गई प्याज की फसल में थ्रिप्स कीट का प्रकोप अधिक आने संभावना होती है। थ्रिप्स कीट की निगरानी करें। थ्रिप्स कीटों की संख्या अधिक दिखने पर प्रोफेनोफॉस 50 ई०सी० दवा का 1.0 मि०ली० प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड दवा का 1.0 मी.ली. प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। अच्छे परिणाम हेतु चिपकाने वाला पदार्थ जैसे टीपोल 1.0 मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल में मिलावें।
- पपीता की खेती करने वाले किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि 12 से 17 फरवरी तक नर्सरी की तैयारी कर बीज की बुआई कर दें। अन्यथा देर होने की स्थिति में बढ़ते तापमान के कारण रोपनी के समय पौधे पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानों को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अकान्त फलियों खाने योग्य नहीं रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। 15-20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टेयर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई० सी० या नोवाल्युरॉन 10 ई० सी० का 1 मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए जिन किसान भाईयों की खेत की तैयारी हो चुकी है बुआई शुरु कर सकते हैं तथा जिन किसानों का खेत तैयार नहीं है वैसे किसान भाई खेतों की तैयारी जल्दी करें। 150-200 कि०घंटा प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें।
- रबी मक्का की फसल जिसमें धनबाल एवं मोचा आ गई हो, में सिंचाई कर 50 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- अरहर की फसल जिसमें 50 प्रतिशत फूल आ गया हो उसमें फली छेदक कीट से बचाव के लिए प्रोफेनोफॉस 50 ई० सी० दवा 2.0 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- बसन्तकालीन ईख एवं शकरकरन्द की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। अक्टूबर-नवम्बर महीनों में रोपी गई ईख की फसल में हल्की सिंचाई करें। जो किसान भाई बसन्तकालीन ईख लगाना चाहते हैं, खेत की तैयारी कर बुआई शुरु करें।
- ऐसे बाग जिसमें निकट भविष्य में फूल आनेवाले हो उसमें इमिडाक्लोप्रिड (17-8 SL) @0.5 मिली/लीटर एवं हेक्सा कॉनाजोल (हेकॉनाजोल) 1 मिलीलीटर/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से क्रमशः हापर एवं चूर्णिल आसिता के साथ साथ अन्य फफूंद जनित रोगों की उग्रता में कमी आती है।
- आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना को देखते हुए किसान अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बागानों में दीमक, मधुआ एवं दहिया कीटों तथा पौउड़ी मिल्डेव रोग की निगरानी करें।
- केला की सुखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर खेत से बाहर करें जिससे रोग की उग्रता में कमी आयेगी। हल्की गुड़ाई करने के बाद प्रति केला 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटैश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें।
- दुधारु पशुओं में डेगनाला बीमारी की संभावना नवम्बर से फरवरी माह के बीच रहती है। यह बीमारी पशुओं को फफुंदयुक्त पुआल खाने से होता है। फफुंदयुक्त पुआल खाने से पशुओं में सेलेनियम विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है। इस बीमारी के लक्षण में दुधारु पशुओं के थन एवं पूछ का सड़ना पाया गया है। इससे बचाव के लिए 1.0 ग्राम सोडियम हाईड्रक्साइड को 400 मि०ली० पानी में घोल कर उसे 20 किलोग्राम पुआल पर छिड़काव कर पशुओं को खिलाये। साथ में 200 ग्राम तीसी तथा 200 ग्राम छोवा या गुड़ मिलावे। इस बीमारी के उपचार के लिए बीमार पशुओं को पेन्टासल्फ दवा 60 ग्राम पहले दिन खिलाये तथा उसके बाद 15 दिनों तक 30 ग्राम खिलाये।

आज का अधिकतम तापमान: 25.8 डिग्री सेल्सियस,  
सामान्य से 0.8 डिग्री सेल्सियस अधिक

आज का न्यूनतम तापमान: 9.5 डिग्री सेल्सियस,  
सामान्य से 0.1 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ० गुलाब सिंह)  
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ० ए. सत्तार)  
वरिय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)